

गेहूं की फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन

गेहूं रखी मौसम में उगायी जाने वाली भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है। देश के हरित क्रांति में खाद्यान्न के उत्पादन को बढ़ाने में गेहूं फसल की मुख्य भूमिका रही है। गेहूं के कुल उत्पादन का लकाग 90 प्रतिशत से भी अधिक भाग देश के चंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदानी भाग यांत्रजनन व मध्य प्रदेश से प्राप्त होता है, परंतु इन क्षेत्रों के अंतर्गत गेहूं की औसत उपज में अंतर बहुत बड़ा गया है, जबकि उत्तर प्रदेश में गेहूं का 90 प्रतिशत क्षेत्र सिंचाया है, लेकिन उत्पादनका 25.6 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। अग्रणी प्रदेशों जैसे पंजाब और हरियाणा की उत्पादनका क्षमता: 44 और 38 किंवद्धि प्रति हेक्टेयर है। लेकिन यह किसान उत्तर बोंज, समय से सिंचाया खाद्यपत्ता, कड़ाव एवं बीमारियों का नियंत्रण तथा और उत्पर्कों का सहृदित उपयोग वैज्ञानिक ढंग से करें को गेहूं की उपज 50 से 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

गेहूं में लगाने वाले प्रमुख कीट

दीमक: ये मिट्ठी में रहने वाले उत्तरे रंग की चाँदी की तरह होते आकर के कठी हैं। ये जीवन में सुरुगे और अतर ये गोही की छोटी-छोटी जड़ों को खाका नुकसान पहुंचाते हैं। प्रक्रिया अधिक होने पर ये तने को भी खा सकती हैं। अन्त में प्रभावित पौधे जाते हैं। आक्रान्त पौधों को उड़ाने पर तने में मिट्ठी लगी पायी जाती है।

गजिया बीवीचार: यह कीट भूरे मट्टीमेले रंग का होता है। जो सुखी जमीन में ढेले एवं दरारों में रहता है। सर्वियों में इसका प्रक्रिया अधिक होता है। यह कीट उग रहे पौधों को जमीन की सहर के साथ कट कर हानि पहुंचाता है। अधिक प्रक्रिया होने पर फसल पूर्णतया नष्ट हो जाती है।

प्रबंधन

1. तन क्षेत्रों में दीमक/गुजिया बीवीचार का प्रक्रिया हमेशा होता है तो खेत की प्रीभाकालीन जुराई करना चाहिए।

2. खेत की खाद्यपत्ता से मुक्त रखना चाहिए।

3. हेमेशा सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए।

4. बुवाई से पूर्व दीमक नियंत्रण हेतु क्षेत्रोंपारीफोस 20 ईंसी. की 5 मिली मात्रा प्रति किलोग्राम जीव की दर से बीजोंपत्ता करना चाहिए।

5. जड़ों फसल में दीमक/गुजिया बीवीचार के नियंत्रण हेतु क्षेत्रोंपारीफोस 20 ईंसी. का 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करना चाहिए। अथवा इस दवा का 2.5 लीटर प्रति लीटर पानी में खोल बनाकर छिड़िकाव करना चाहिए। क्षेत्रोंपारीफोस 1.5 प्रतिशत धूल का 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व अंतिम जुराई के समय मिट्ठी में मिलाना चाहिए।

तन बेधक:

कपी-कभी गेहूं में तना बेधक कीटों का प्रक्रिया देखा गया है। अंडे कीटों की मादा पौधियों के निचले सत पर अंडा देती है। अंडे से निकले कीटोंपत्ता उत्पादन तने में चुयकर उसे काटने लगता है।

पर्यावरणमत: फसल नष्ट हो जाती है। ये कोट कपी-कभी सुखी वाली खेतों में दिखाई देता है।

प्रबंधन

1. अंडे समूहों को एकत्रित कर नष्ट कर देना चाहिए।

2. कार्टरॉट्प हाइड्रोलोग्राइड 50 एस.पी. 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी वा डीनलफोस या प्रोफेनोफोस 50 ईंसी. की 1.25 मिलों प्रति लीटर पानी का पोल बनाकर



छिड़िकाव करना चाहिए।

माहू

यह कोट काले, हरे रंग के खंडयुक एवं अंश्यालीन होते हैं। इसके शिशु एवं व्यक्त पत्तियां एवं दूरी वालीयों से सस्ते चुम्बकर हानि पहुंचाते हैं। माहू भूमध्यावाली भी करते हैं जिस प्रकाश संश्लेषण में वादा उत्पन्न होती है।

प्रबंधन

1. फसल की चुआई समय पर करना चाहिए।
2. खेत में पोली रंग के टिन के चारों ओर चिपचिपा पदार्थ लगाकर लकड़ी के सहारे खेत में 5 से 6 प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में गाड़ देना चाहिए। पीले से आक्रियत होने और इससे चिपक क कम प्रभाव आयें।

3. डाइमिथोएट 30 ईंसी की 2 मिली. मात्रा को प्रति लीटर पानी वा फेनेमेटरेट 20 ईंसी. की 10 मिली मात्रा का पानी में खोल बनाकर फसलों में छिड़िकाव करना चाहिए।

गेहूं में लगाने वाले प्रमुख रोग

गेहूं की फसल में लगाने वाले प्रमुख रोग इस प्रकार होते हैं:

पीला रुत्ता

गेहूं की फसल में पीला रुत्ता रोग के आने की संभावना जनवरी और फसली में रहती है। परन्तु पीले रंग की धारिया दिखाई देती हैं और उन पर छोटे, चमकदार पीले, गोल पस्तू विशिष्ट पॉकियों में बहते हैं। इन पौधियों को छोड़ पायदानमुना पीला पर्याप्त हाथ पर लगाना इसका मुख्य लक्षण है।

अंकुर लाइरिंगीयों में रोग तीव्री से फैलता है और यांत्रिक उपचार देने से अलग होता है। इन पौधियों के लक्षणों पर देखा जाता है।

प्रबंधन

1. चुआई के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन प्रधान उत्पर्कों की अत्यधिक मात्रा रुत्ता रोगों को छब्दने में सहायक होती है इसलिए उत्पर्कों के संतुलित।

3. अनुप्राप्त या पोटायों की डिचिट मात्रा का प्रयोग करने।

4. रोग के लक्षण दिखाई देते हो प्रोपिकोनाजोल 25 ईंसी. वा टेक्स्कोनोजोल 25 ईंसी. का 0.1 प्रतिशत लीटर खोल बनाकर छिड़िकाव करें।

काला रुत्ता

इस रोग को संक्रमण होने पर गहरे रक्त भूरे रंग के फैलते मुख्यतः तने पर उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न वादा पर्याप्त वा पौधों पर भी जाता है। यह फैलते आपस में मिलकर तने वा पत्तियों पर बढ़े थोड़ी की ओर लेते हैं। जिसके परिणामस्वरूप तने कमजोर हो सकते हैं और हावाओं और खारियों में पौधे भी समस्त होते हैं। संक्रमण अधिक होने पर दाने कमजोर हो जूनीर बढ़ते हैं जिससे उत्तर बहुत कम हो जाती है।

प्रबंधन

1. चुआई के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन प्रधान उत्पर्कों की अत्यधिक मात्रा रुत्ता रोगों को छब्दने में सहायक होती है इसलिए उत्पर्कों के संतुलित।

3. अनुप्राप्त या पोटायों की डिचिट मात्रा का प्रयोग करने।

भूरा रुत्ता

इस रोग से ग्रसित पौधों की निचली पत्तियों पर नारंगी से भूरे रंग के गोल कालोंसे उत्पन्न होते हैं। जोकि पत्तियों के ऊपरी वा निचली सतह पर अनियमित विरुद्ध



दिखाई देते हैं। जैसे-जैसे बीमारी का प्रकोप वढ़ता है इसके लक्षण पौधों की ऊपरी पत्तियों वा तनों पर भी दिखाई देते हैं।

प्रबंधन

1. चुआई के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन प्रधान उत्पर्कों की अत्यधिक मात्रा रुत्ता रोगों के लक्षनों में सहायक होती है इसलिए उत्पर्कों के संतुलित।

3. अनुप्राप्त या पोटायों की डिचिट मात्रा का प्रयोग करने।

4. रोग के लक्षण दिखाई देते हो प्रोपिकोनाजोल 25 ईंसी. वा टेक्स्कोनोजोल 25 ईंसी. का 0.1 प्रतिशत लीटर खोल बनाकर छिड़िकाव करें।

काला रुत्ता

इस रोग को संक्रमण होने पर गहरे रक्त भूरे रंग के फैलते मुख्यतः तने पर उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न वादा पर्याप्त वा पौधों पर भी जाता है। यह फैलते आपस में मिलकर तने वा पत्तियों पर बढ़े थोड़ी की ओर लेते हैं। जिसके परिणामस्वरूप तने कमजोर हो सकते हैं और हावों और खारियों में पौधे भी समस्त होते हैं। संक्रमण अधिक होने पर दाने कमजोर हो जूनीर बढ़ते हैं जिससे उत्तर बहुत कम हो जाती है।

प्रबंधन

1. चुआई के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन प्रधान उत्पर्कों की अत्यधिक मात्रा रुत्ता रोगों के लक्षनों में सहायक होती है इसलिए उत्पर्कों के संतुलित।

3. अनुप्राप्त या पोटायों की डिचिट मात्रा का प्रयोग करने।

4. रोग के लक्षण दिखाई देते हो प्रोपिकोनाजोल 25 ईंसी. वा टेक्स्कोनोजोल 25 ईंसी. का 0.1 प्रतिशत लीटर खोल बनाकर छिड़िकाव करें।

गेहूं का ब्लास्ट

यह रोग पत्तियों वा लालियों तथा दानों को संक्रमित करता है। इसलिए खेतों में खुले रंग के खंडक देते हों जो बाट में भूरे रंग के नाली के आकार के हो जाते हैं। संक्रमित पत्तियों जल्दी सूख जाती हैं। लालियों पर रोग काली सफाई एवं खंडक देते हों जो बाट में खुले रंग के नाली के आकार के हो जाते हैं।

प्रबंधन

1. चुआई के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन प्रधान उत्पर्कों की अत्यधिक मात्रा रुत्ता रोगों के लक्षनों में सहायक होती है इसलिए उत्पर्कों के संतुलित।

3. अनुप्राप्त या पोटायों की डिचिट मात्रा का प्रयोग करने।

4. रोग के लक्षण दिखाई देते हो प्रोपिकोनाजोल 25 ईंसी. वा टेक्स्कोनोजोल 25 ईंसी. का 0.1 प्रतिशत लीटर खोल बनाकर छिड़िकाव करें।

भूरा रुत्ता

इस रोग से ग्रसित पौधों की निचली पत्तियों पर नारंगी से भूरे रंग के गोल कालोंसे उत्पन्न होते हैं। जोकि पत्तियों के ऊपरी वा निचली सतह पर अनियमित विरुद्ध

दानाप्सोकी स्टोबीन 50 प्रतिशत, टेक्स्कोनोजोल 25 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. 120 ग्राम प्रति 200 लीटर घोल दानों एक एकल खेत में दिखाई करें।

करनाल ब्लैट

करनाल ब्लैट एक ऐसी बीमारी है जिसका खड़ी फसल में पत्ता लालाना बहुत मुश्किल है। बीमारी का पता श्रीशिंग के बाद ही चलता है। रोग प्रस्त दाने में पौधों वाली वालियों से दिखाई देता है। यह फसल रोग प्रस्त दाने में पौधों वाली वालियों के बाद जाता है।

प्रबंधन

1. खस्स के लिए रुत्ता प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करना।

2. नाइट्रोजेन-प्रोपिकोनाजोल 25 एंसी.पी. प्रतिशत में दिखाई देता है।

3. बीमारी दानों के लिए दिखाई देता है।

4. बीमारी दानों के लिए दिखाई देता है।

प्रायुक्ति चूहे

चूहों की दौ-तीन प्रायोदीयी खेत में गेहूं को खड़ी फसल के बहुत अधिक हानि पहुंचाती है।

नियंत्रण के तथा

चूहों की नियंत्रण के लिए चूहों के बिल देखा जाए तो अधिक सफलता मिलती है।

1. पहाड़ा दिन-खेत की नियंत्रण करें तथा जितने चूहे के बिल हो वहां से गेहूं हुए डैंडे की हड्डी देखा जाए।

2. द्वारा दिन-खेत में जाकर बिल की नियंत्रण करें।

3. बीमारी का बाना दुहाली देखा जाए।

4. चूहों के लिए दिन-खेत की नियंत्रण करें।

5. चूहों की दौ-तीन प्रायोदीयी खेत में गेहूं देखा जाए।

6. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

7. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

8. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

9. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

10. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

11. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

12. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

13. छाता दिन-खेत की नियंत्रण करें।

जीरे की फसल पर संकट के बादल

जोधपुर (कासं) । मौसम तंत्र आए
नक बदलाव से जीरे की फसल पर
ट बादल मंडाने शुक्र हो गए हैं।
मौसल दिन-भर बादल छाए
से जीरे की फसल में रोग लगाने
का चुर्चा गई है। ऐसे में कृषि विज्ञान
फलादी के वैज्ञानिकों ने भी जीरे
ललसा रोग लगाने की आशंका जता दी
था। इस रोग पर नियन्त्रण को लैकर



वे फैलता हैं तथा लक्षण दिखाई देते ही विवरण के उपाय करने आवश्यक हो जाते हैं। अगर रोग पर निवृत्ति न हो तो कसल में भारी नुकसान की संभावना

यह करें उपाय: पौध संरक्षण विशेषज्ञ डॉ. गजानंद नागल ने बताया कि जीरे में झुलसा रोग के प्रबंधन के लिए युवाराज के 30-30 दिन बाद फसल पर दो बार देखें। इसके बाद अपने बाद फसल पर दो बार देखें।

मन का जब ४० डिग्री पर अथवा
जहाँ नहीं ऊपर सीधी लगती है

अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली से मिर्च 10 लले सतह में मिर्च की ओर रोपाई कर प्रयोगिक तीर पर लगाए। मिर्च की है और वो भी गुच्छे में। पूसा सदाबहार, जो दोनों तरफ उभयं

॥ सदाब्रह्म मिर्ची पौधे के नींवे नहीं छप सीधी लगती है

जो विशेष पाता है जो अमृतन के लिए उत्तम तथा उत्तम है। इसके लिए यह विशेष विधि के साथ एवं मिर्च की और लटकी हुई गोदान की देती है। लेकिन बिराई के धनवंतरि न में मिर्च की एक देसी पीपू है, जिस पर्याप्त ऊपर की ओर सीधे बिराई देती है। मिर्च की ये किस्म जहाँ लागें को पर्याप्त करती है वहाँ स्वाद में भी उनी लीजाएं हैं। जितनी दूरी रिया लेती है वहाँ उत्तम अनुसंधान केन्द्र, नह दिल्ली से मिर्च 10 बीज लेकर आया और सितारबक के पहले सालाह में मिर्च के बीज रोपाइ जाएं। अब उसके बाद दो क्यारायी में प्रायोगिक तीर पर लगाए। मिर्च की सप्तवार यह है कि वे पीपू सीधे भी खोड़ दें। और वो भी खोड़ दें। पूरा सदाबहार लिया जाए। इसके बाद उसके लिए निम्न तात्परी अंत लेनी है।

दलों के बाद अब ऑयल सीड का ह्य होगा श्रीगंगानगर

श्रीगणानगर (विसं) राष्ट्रीय दलहन उत्पादन कार्बोक्रम के तहत पल्सेज हब बनाने की प्रक्रिया के बाद केंद्र सरकार ने श्रीगणानगर कृषि उत्पादन केंद्र को अलैट मीट हब (सर्सों और उत्पादन केंद्र) बनाने की विधि की है। इसके तहत सर्सों के विभिन्न ग्रीष्मरीसांस से प्रमाणित बीज तैयार किया जा रहा है। कृषि अनुसंधान केंद्र के लेखाचार डॉ. उमरुमुख शर्माने

सरसों की 4 किलो में किसानों के खेतों में हो स्थीर तैयार

हाल के वर्षों में कवि अनुसंधान केंद्र में तैयार किया गए सरसों के ड्रोड मीडियम आरजीएन-298, आरजीएन-229 एवं आरजीएन-236 का बीज प्रगतिशील किसानों के खेतों में तैयार किया जा रहा है। जींगों किस्मों के ड्रोड डॉ. रोशवाला यहीं हैं और उनको देखने खेत में इन दिनों खेतों में सरसों की फसल तपति बीज है। आइए किस्मों में आरजीएन-298 एवं आरजीएन-229 वर्षों की फसल तपति बीज है। आइए साल तक किसानों के पास जब दोनों किस्मों का बीज पहुँचेगा तो उन्हें बायानी खेतों में सरसों की फसल उपजाने का बहुप्रतीक्षित मीठ मिलेगा। ताकि रोपे कि सरसों की फसल बढ़ा अथवा स्थिति परिवर्त्तन मानी जाती हो, लेकिन ये दोनों किस्में बढ़ाव तक काम पानी बढ़ाव तक पर्याप्त नहीं के बाबी ईडी का सकती है। इसके बाबा अगर सरदियों में बायान हो जाए, तो पर्याप्त उपज हो सकेगी। इन तीनों किस्मों के अलावा भरतपुर कृषि अनुसंधान केंद्र का ग्रीड सीडी गिरिराज का प्रमाणित बीज तैयार किया जा रहा है।

1000 किंटल मिलेंगे प्रभासित बीज: किसानों को अगले साल बुआई के समय कृषि बैंडिनगों द्वारा तैयार किया गया ग्रीड से सीधा प्राप्ति बीज लगभग एक हजार किंटल कृषि अनुसंधान केंद्र से मिलेंगा। प्रभासित बीज बिक्री के लिए केंद्र का प्राइवेट रेस्टर, डिस्ट्रीब्यूटर और डीलर का लाइसेंस लेना होगा। इसकी प्रक्रिया अपूर्ण करने का लक्ष्य जारी है।

प्रक्रियानुसार केंद्र के द्वारा कृषि अनुसंधान केंद्रों के कृषि विभाग विभाग के उपर्यन्तकार के बाबा फाइल लगा रखते हैं।

बीज पर शोध करने वाले वैज्ञानिक लगभग 8 साल मेहनत करके नया बीज लाते हैं। जब यह खुले बाजार में आता है तो भिलावट की आशंका रहती है, लेकिन जब वैज्ञानिक स्वयं या बीज बाजार में उपलब्ध करवाएंगे तो किसानों की बीज की गुणवत्ता के मामले में भी चिंता या संशय नहीं रहेगा। - डॉ. उम्मेदसिंह शेखावत, वैज्ञानिक अधिकारी, भिलावट, वैज्ञानिक विभाग, भारतीय राष्ट्रीय विद्यालय, लखनऊ

फल-फूल रही है काले सोने की फसल



चिंताइगङ (विसं)। काला सोना कही जाने वाली अपेक्षा की फसल चिकाराड़ा स्थित क्षेत्र में फल-फूल रही है। इस फसल को लेकर काटाकर कानी मसक करते हुए पूल बढ़ा करते हैं। इसके लिए काटाकरोने का बाहर प्रकर के जरूर नहीं होते हैं। विपरित अनुकूलता के बावजूद भी काटाकर उस से मसक नहीं होता है। तथा दूसरे फसल को लेकर तांडा रहता है। फसल की बुबाह से लेकर नियाँ गुहाइं तक विशेष अन्न रखते हुए काव्य को सम्प्रकरण करता है। फूल फल (डॉडे) निकलने के साथ ही अपना ढोरा कूप पर लाल लेता है। अपेक्षा की फसल से यह गुया गोदा ही काम आता है। इस समय मौसम घरातक के चलते अपेक्षा में अधिकर तना छेदन, जड़न, गोन, सफद काली मस्ती और गुयाखोरी योग के साथ साथ अन्य वंशधारी की शिकायत बढ़ता तो दाता में हो रही है।

गांजस्थान को हेटी हुया औं हेटी पढ़ाओं होजना में मिला गाण्डीज अवार्ड

Hindchem Corporation



N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER	AMINO ACID
AMINO+HUMIC SHINY BALLS	FERROUS SULPHATE 19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%	FERROUS EDTA 12%
E.D.T.A. ACID	CAMPHOR
EDTA DISODIUM	SODIUM BICARBONATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%	CITRIC ACID MONOHYDRATE
SULPHUR 90% -80WDG	BORON 20%
BRONOPOL 25%	PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry

Tel. 022-66998360/61

Fax-022-66450908

Email id: mamta@hindchem.com

Mo. 9004744077

समेकित कृषि प्रणाली एवं इसके लाभ

वर्तमान में अधिक कृषि उत्पादन प्राप्त करने के लिए खेती में अधिक एवं असंतुलित मात्रा में रासायनिक उत्पादन, कौटनागी, शाकनागी, बकवनागी, एवं भूमि की कृषि मरणीनों आदि का अधिक-स्थूल प्रयोग हो रहा है। जिसके कारण कृषि उत्पादन में तो चूढ़ हुई है किंतु प्राकृतिक-संसाधनों व पर्यावरण के विभिन्न घटकों जैसे-जैविक एवं अर्थीकृत तथा भूमि की उत्तराता एवं उत्पादकता पर कृप्रभाव पड़ने लगा है औं जिससे भूमि का मूल स्वरूप ही बदल गया है। आज भारतीय कृषि अनेक चुनौतियों का सम्बन्ध कर रही है। जिसमें मुख्य रूप से सूखा, बाढ़, भूचाल, अस्तीयता एवं इसके अलावा देश की तीव्र गति से बदली जनसंख्या है। इन समस्याओं के समाधान के लिए पर्यावरण एवं कृषि भूमि को बिना हानि पहुंचाने प्रति इकाई क्षेत्र से प्रति इकाई समय में अधिक कृषि उत्पादन बढ़ावा देखी जाए औं वर्तमान जनसंख्या को खालील सुरक्षा हेतु भोजन, सब्जी, दलबन, विलहन दूध उत्पादक करने के लिए समेकित कृषि प्रणाली अपनाई जाए। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार कृषि के विभिन्न घटकों जैसे-फलोल्यादन, पशुपालन, फूल-फल, सब्जी एवं चारा उत्पादन, कृषि व्यापकी, मशक्कम उत्पादन, मधुमक्की पालन, मुर्गी व भेड़-बकरी पालन, केंचुआ खाद उत्पादन तथा वर्षी जल संपर्क, आदि का इस प्रकार समाधान किया जाये कि वे एक-दूसरे पर निर्भर हो, जिससे कृषि संसाधनों की क्षमता तथा उत्पादकता तथा पर्यावरण को संरक्षित रखें हुए कृषि की कामों तो इसे समेकित कृषि प्रणाली होती है। समेकित कृषि प्रणाली द्वारा स्वर्योत्तर चलता रहता है, जोखिम कम रहता है तथा साथ ही उड़ा एवं पोषण का पुनर्वर्तन चलता रहता है किंतु संसाधनों का सही उपचार पर्योग हो पाता है।

समेकित कृषि प्रणाली क्या है?

-समेकित कृषि प्रणाली खेती का एक रूप है जिसके अंतर्गत फसलोल्यादन, बागवानी, मधुमक्कीपालन, मधुमक्कीपालन, कृषि व्यापकी आदि औं समय एवं फलोल्यों की प्रणालियों को टिकाऊ आजीविका क्षमता सुखा सर्वजन और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य हेतु एकीकृत किया जाता है।

-कृषि फसलों के साथ ही कृषि के अन्य घटकों जैसे-फलोल्यादन, बागवानी, मुर्गी पालन, मधुमक्की पालन को समाहित किया जाये ताकि किसान अपने काम के उत्पादन से ही अपने व अपने परिवार को उस सभी समस्याओं से निजात दिला सकते हैं इसे ही समेकित समेकित कृषि पद्धति जो एक किसान के पास प्राकृतिक संसाधनों जैसी जल एवं उत्पोषिता को ध्वनि में रखकर करने का अवधर प्रदान करती है।

-समेकित कृषि प्रणाली में कृषि उत्पादन, जैसे-फसल उत्पादन, पशुपालन, मधुमक्कीपालन, मशक्कम उत्पादन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन व पुष्प उत्पादन आदि को इस प्रकार सम्मिलित किया जाता है कि उपलब्ध संसाधनों का अधिक से अधिक उपयोग कृषि उत्पादन में होता है।

समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य लाभ



-कृषि परिवार की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, जिससे बाजार पर किसान की निर्भरता को कम किया जा सके।

-कृषि परिवार हेतु खनिज तत्वों एवं विटामिन से भरपूर खोज पदार्थ की प्रचुर मात्रा में उत्पादित।

-कृषि में विभिन्न कृषि उत्पादों को शामिल करने वाला उपलब्ध प्रभाव करना।

-स्वर्योत्तर के अवधर बढ़ाना।

-भूमि, जल व अन्य प्राकृतिक संसाधनों का विवरकपूर उपयोग से अधिकता उत्पादन लेना।

-कृषि का किसास के एक निरन्तर चलने वाली क्रिया है। अतः कृषि में नवी असंधानों को शामिल करना औं नई समस्याओं का समाधान करना।

-किसान की सामाजिक-अधिक दशा को ऊपर उठाना।

-समेकित कृषि प्रणाली में फसल अवशेषों का सही उपयोग एवं दक्षतापार्न प्रयोग में लाने हेतु उत्पादक विभिन्न उत्पादों के बीच संबंध एवं एक दूसरे का पूरक होने का ज्ञान होना अत्यधिक है, ताकि एक उत्पाद के अवशेष की दूसरे उत्पाद हेतु नियन्त्रण के रूप में अधिक क्षमता एवं दक्षतापूर्ण इस प्रणाली के अंतर्गत उपयोग किया जा सके। इस क्रम में यह आवश्यक है कि कृषि उत्पादक जीवन का 40 प्रतिशत भाग धन्यवाची फसलों, 20 प्रतिशत भाग लहरी, 5 प्रतिशत भाग लिलही, 15 प्रतिशत भाग सब्जी एवं फलोल्यादन, 10 प्रतिशत भाग मधुमक्कीपालन तथा 10 प्रतिशत भाग मक्का एवं जानवरों के निवास, सिंचाव हेतु नाला आदि के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। समेकित कृषि प्रणाली में किसानों के परिवार को केंद्र में रखते हुए मुद्रा, जल, फसल, पशुपालन, ब्रम एवं अन्य संसाधनों को पूरक के रूप

में रखकर कृषि एवं इससे सम्बंधित त्रियाकलाओं का प्रबंधन इस प्रकार से किया जाता है कि वर्ष भर रोजावार उत्पादक होने के साथ-साथ उत्पादन एवं आय अधिकतम हो।

समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य घटक

फसल : धान, गेहूं आदि अनादि की फसलें,

दलहान एवं तिलान फसलें।

पशुपालन : डेयरी, मुर्गी पालन, भेड़-बकरी चालन सूअर पालन आदि।

बागवानी : पूल, फल एवं संजीवानी आदि।

मधुमक्की पालन : देशी एवं विदेशी कार्य के लिए विभिन्न प्रकार।

कृषि व्यापकी : संयंव्र, ईंधन-लकड़ी, इमारतों-लकड़ी आदि व्यापक।

मधुमक्की पालन

के चाचा खाद उत्पादन

समेकित कृषि प्रणाली के प्रकार

समेकित कृषि प्रणाली में मूलतः किसी एक घटक पर आधारित करके दूसरे घटकों को सम्बन्धित करता है। देश में मूलतः यों घटक पर आधारित करके कृषि प्रणालीय अपनाई जा सकती हैं, जैसे-

अ. फसल पर आधारित समेकित कृषि प्रणाली

1. धान के साथ मधुमक्कीपालन।

2. फसल के साथ मधुमक्कीपालन/बत्तस्यापालन

3. फसल के साथ बागवानी।

4. फसल के साथ बागवानी/कृषि व्यापकी

5. फसल के साथ बागवानी-चारागाह/कृषि व्यापकी

ब. पशुपालन पर आधारित समेकित कृषि प्रणाली

1. फसल के साथ भेड़-बकरी पालन

2. फसल के साथ दुधारु पशुपालन

3. फसल के साथ दुधारु पशुपालन एवं मधुमक्कीपालन।

4. कृषि फसल के साथ पशुपालन

5. कृषि फसल के साथ बागवानी एवं मधुमक्कीपालन।

स. मधुमक्कीपालन पर आधारित समेकित कृषि प्रणाली

1. बागवानी के साथ मधुमक्कीपालन।

2. धान फसल के साथ मधुमक्कीपालन।

3. रेशम पालन के साथ मधुमक्की पालन।

4. बत्ता पालन के साथ मधुमक्की पालन।

5. मुर्गी पालन के साथ मधुमक्की पालन।

6. दुधारु पशुपालन के साथ मधुमक्की पालन।

7. सूअर पालन के साथ मधुमक्कीपालन।

8. बकरी पालन के साथ मधुमक्की पालन।

9. खरगोश पालन के साथ मधुमक्की पालन।

उत्पादक के अलावा भारत में अपार्नाई जाने वाली कुछ प्रमुख समेकित कृषि प्रणाली इस प्रकार से हैं-

+फसल+पशुपालन, बागवानी+पशुपालन, फसल+

+बागवानी+पशुपालन, फसल+कृषि व्यापकी+

+पशुपालन, फसल+मधुमक्कीपालन, फसल+

+मधुमक्कीपालन, फसल+बागवानी+कृषि व्यापकी+

+पशुपालन, आदि।

समेकित कृषि प्रणाली के लाभ

-समेकित कृषि प्रणालीय अपनाई होकर भूमि से अधिक उत्पादन प्राप्त करके एक अवधर प्रदान करता है। समेकित भूमि पर फसलों का विविधत्व एवं निर्भरता कम हो जाती है एवं हमारे उत्पादन पर आने वाले व्यवहार भी कमी हो जाती है।

-समेकित कृषि प्रणालीय अपनाई जाने से योग्य तत्वों का पुनः प्रयोग हो जाता है तथा इससे दूसरे पदार्थों पर हमारी निर्भरता कम हो जाती है एवं हमारे उत्पादन पर आने वाले व्यवहार भी कमी हो जाती है।

-समेकित कृषि प्रणाली में एक घटक का अवधरण दूसरे घटक द्वारा उपयोग में लिया जाता है जिससे रासायनिक खादों एवं अन्य रासायनिक घटकों पर हमारी निर्भरता कम हो जाती है तथा भूमि पर्यावरण का संरक्षण लंबे समय तक होता रहता है।

-समेकित कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों से पूर्व व्यापकीय अपनाई होती है।

-समेकित कृषि प्रणाली में संयुक्त भूमि का उपयोग किया जाता है जैसे- खेत की मैदां, नालियों, तालाव के धेरायांदी वाले क्षेत्रों में भी संजीवी, फूल-फल, चारा उत्पादन एवं लगाए जाने से योग्य तत्वों के साथ समय तक होता रहता है।

-समेकित कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों से पूर्व व्यापकीय अपनाई होती है।

-समेकित कृषि प्रणाली में संयुक्त भूमि का उपयोग किया जाता है जैसे- खेत की मैदां, नालियों, तालाव के धेरायांदी वाले क्षेत्रों में भी संजीवी, फूल-फल, चारा उत्पादन एवं लगाए जाने से योग्य तत्वों के साथ समय तक होता रहता है।

लघु कृषकों हेतु मङ्गल (क्षेत्र 1-हैंडटर्य)

इस मॉडल के अंतर्गत यह एक हैंडटर्य जर्मन

पर फसल उत्पादन, पशुपालन, बागवानी मधुमक्की

पालन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन व पुष्प

उत्पादन से रुपये 53,000 संजीवी चपु पूर्ण

उत्पादन से रुपये 9,000 बागवानी से रुपये

79,000, पशुपालन + मुर्गी पालन + मधुमक्की

पालन से रुपये 93,500 की शुद्ध आय कृषकों को

प्राप्त होती है। इसमें से कुल लागत रुपये 1,70,500 की शुद्ध आय

23,000 की शुद्ध आय होती है। यदि उत्पादन अनुसार देखा जाये तो

फसल उत्पादन से रुपये 53,000 संजीवी चपु

उत्पादन से रुपये 9,000 बागवानी से रुपये

79,000, पशुपालन + मुर्गी पालन + मधुमक्की

पालन से रुपये 93,500 की शुद्ध आय कृषकों को

प्राप्त होती है। इसमें कुप्रयोग के लिए एहा

चारा उत्पादन एवं फसलों के लिए कोई स्टार्ट का उत्पादन स्वयं के खेत पर किया जाता है। बायोप्रोसेस के

माध्यम से इंधन की प्राप्ति होती है।

जीरे की फसल में कीट एवं रोग से बचाव



विभिन्न जीवीय मसाला फसलों में कीट एवं रोग कारणों की दर से भूकाव करें।

जीरे अन्यसमय में पकने वाली प्रभुत्व नकदी फसल है। जीरे के दानों में पाये जाने वाले वायरासील तेल के कारण ही इसमें जायकर रोग होता है। इसी सुगंधि के कारण जीरे का मसालों वें रुप में उपयोग किया जाता है। जीरे में यह विशिष्ट सुगंध क्वार्मिनिं या क्वार्मिन एल्कालाइड के कारण होता है। इसका उपयोग मसाले के अलावा औद्योगिक रूप में भी होता है, जीरे में मुख्यधूम, चावुनाशक, व अग्निदीपक गुण पाये जाते हैं। इन गुणों के कारण कई देशों में अयुर्वेदिक दवाओं में जीरे का उपयोग बढ़ता हो रहा है।

भारत में जीरे की खेती अधिक नमी वाले क्षेत्रों को छोड़कर देश के सभी राज्यों में की जाती है। जीरे के कुल क्षेत्र व उत्पादन का लगभग 90% प्रतिशत भारत द्वारा बुजर्जता के अन्तर्गत आता है। देश के कुल उत्पादन का 48 प्रतिशत जीरा राजस्थान में होता है। राजस्थान के जालौर, चांडीगढ़, पाली, अजमेर, जीधपुर, नारायणी, टीकोनी व जयपुर जीरा उत्पादन करने वाले मुख्य नकदी फसल हैं।

जीरे की फसल एक प्रभुत्व नकदी फसल है। संतुलित खाद्य की साथ-साथ फसल की वीमारियों को कठोर से बचाव करकर बहुत ज़रूरी है। जीरे की पौधाकाफी नाज़ुक होती है। थोड़ी सी भी लापरवाही जीरे की फसल को प्रभुत्व करकर बहुत ज़रूरी है। जीरे का पौधाकाफी नाज़ुक होती है। थोड़ी सी भी लापरवाही जीरे की फसल में विभिन्न सकटों हैं। जीरे की फसल में विभिन्न प्रकार के कीटों तथा वीमारियां आने का दूर हमेशा रहता है जिनका सही समय पर सही होता है। इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पीढ़ी की परिणीत व टटियाँ पर संबंध चलती रहती हैं और भी-भीरी सफेद चूर्ण पीढ़ी पर हो सकती है। किसन भाई जीरी तथा रोग पर उत्पादन प्रवर्धन कर फसल को नुकसान से बचाएं।

जीरे की खेती एवं रोग:

छालाया या चीरिल आसिता: यह रोग एरीसीको पोलिगोनी नामक कवक से होता है। इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पीढ़ी की परिणीत व टटियाँ पर संबंध चलती रहती हैं और भी-भीरी सफेद चूर्ण पीढ़ी पर हो सकती है। जिससे पीढ़ी को बृहद रुक जाती है। रोगी फसल की खेती बहुत ही नवाने होती है तो यहाँ रोग अपने पर फसल नहीं हो जाती है तथा देरी से अपने पर बीजों की विपरिण गुणवत्ता पूर्णतया कम हो जाती है।

रोकथाम: रोग के लक्षण दिखने पर 15-20 दिनों तक नामक कवक का प्रतिक्रिया

खी सीजन के दौरान सिंचाई हेतु विजली की आपूर्ति रोटेशन के आधार पर : ऊर्जा मंत्री

जयपुर। ऊर्जा मंत्री वी डी डी कला ने विजासभा में कहा कि प्रदेश में रोगी सीजन के दौरान सिंचाई हेतु विजली की आपूर्ति रोटेशन के आधार पर दी जा रही है, ताकि उत्पादन क्षमता का संतुलन बना रहे तथा किसी प्रकार का व्यवस्थान नहीं आये। उन्होंने शून्यकाल में इस सब्सेप्ट में उड़ाये गये मूँहे पर हस्ताक्षेप करते हुए बताया कि प्रदेश में रोगी विजली के दौरान सिंचाई के लिए विजली की आपूर्ति दिन में दो ब्लॉक और ग्राम में एक ब्लॉक की जा रही है। उन्होंने कहा कि हर साल दिन बाद ब्लॉक को रोटेशन के आधार पर परिवर्तित किया जाता है। इस प्रकार राजि वाले ब्लॉक को अगले दो साल हाई ब्लॉक में रखने के लिए रखा जाता है। कला ने कहा कि वीसीआर गवर्नर भरने की शिकायतों के मुद्रे पर कहा कि इस तरह की शिकायत मिलने पर निःश्वस रूप से कार्यालयी होती जाएगी। उन्होंने कहा कि सीधारी योजना के तहत केन्द्र से बजट मिलने पर आगामी 2 माह में विजली के नेक्षण देने की कार्यवाही की जायेगी।

अग्रेंटी ग्रीष्म कालीन सञ्जिवां : कृष्णांड कुल की अग्रेंटी ग्रीष्म कालीन सञ्जिवां लेने की इच्छुक कृषक इनकी बुवाई हेतु आवश्यक आदानों जैसे बीज, खाद्य, उर्वरक एवं साधानों को अग्रेंट व्यवस्था कर लेवे तथा इनके बीजों को प्लाइटिंग की थेलियों में बुवाई कर देवे। बुवाई से पूर्व बीजों को 2 ग्राम व्याक्रिटिन प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करे थेलियों में 1/3 भाग चिकनी मिट्टी, 1/3 भाग चालू, 1/3 भाग गोबर की खाद्य मिल कर एक थेली में दो बीज बो देवे। थेलियों को रात्रि में पोलिथिन चादर से ढक देवे तथा उपरक तापमान बना रहे। तुरंग, खीरा, लोकी, कहू, कला, रिंग, ककड़ी की उत्त तकिये निर्माणित हैं।

खीजों: बातम खीरा, पूसा संबंधी लौकी: पूसा समर प्रोलिंगिक लौंग, पूसा समर प्रोलिंगिक राघुण, पूसा मंजरी, पूसा नवीन, पूसा मेंदूत, अकां विहार

ककड़ी: लखनी अग्रेंटी, अकां शीतल कारू; पूसा विश्वास, पूसा अलंकार, अकां चन्दन चिकनी तुरङ्ग: पूसा नसदार

केला: कायम्बदूर लौंग, पूसा दो नीसमी, प्रिया, अकां हरित, पूसा विशेष इटिंगा: बीकानेर ग्रीन, दिल भस्टन-टिंडा लूपियाना, अकां टिंडा

मैथी: मटर एवं धनियां: मटर, मैथी एवं धनियां की फसल में छाइया (पादड़ी मिलदूर) के प्रकोप की पौधीयों एवं ठंडियों पर सम्बादवान है। यह कीट पत्तियों में कार्यालयी के लिए उड़ाये देता है। इस रोग का प्रकोप दिवार्ड देने पर 25 किलो गम्भक के चूर्ण का भूकाव करें अथवा एक मिली, मिली, मिलकेक्स, का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

लहसुन एवं प्याजः लहसुन एवं प्याज की फसल में छिप्स कोट (पर्ण जीवी कीट) के प्रकोप की सम्बादवान है। यह कीट पत्तियों से रस चूसते हैं जिससे पत्तियों एवं ठंडियों पर सम्बंध चूर्ण दिखाई देता है। इस रोग का प्रकोप दिवार्ड देने पर 25 किलो गम्भक के चूर्ण का भूकाव करें अथवा एक मिली, मिली, मिलकेक्स, का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पशु: पशुओं को खुरपका एवं मुहूपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवायें।

सृष्टि एंग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम:

संस्था का नाम:

पूरा पता:

ग्राम: तहसील:

जिला: राज्य: पिन कोड:

दूरभाष कार्य: निवास:

सदस्यता राशि

एक वर्ष: 151 तीन वर्ष: 351 पांच वर्ष: 501

कृपया हमें पूर्जे सुधि एंग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उत्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमार्ग द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में

बैंक का नाम ड्राफ्ट चेक क्रमांक दिनांक

स्थान प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर मदद्य

दिनांक

सृष्टि एंग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,

E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

अजीतगढ़ के जगदीश पारीक को कृषि के क्षेत्र में मिलेगा पद्मश्री

सीकर (रिस)। सीकर जिले में अजीतगढ़ निवासी जगदीश पारीक को कृषि के क्षेत्र में पदार्थी से सम्मानित किया जाएगा। जगदीश ने जैविक खेती अनानंदकरण गोभी पर प्रयोग किए हैं। विभिन्न पुस्तकों से सम्मानित जगदीश पूर्व राष्ट्रपति व वैज्ञानिक स्व. ए.पी.जे. अन्वल कलाम को 12 किलो की गोभी भेंट कर चुके हैं।



आधुनिक हुई खेती: बुवारा से लेकर बेचने तक के सफर को देख कर आज हम यह कह सकते हैं कि खेती लाभ गोभी के अनानंदकरण पूर्व राष्ट्रपति व वैज्ञानिक स्व. ए.पी.जे. अन्वल कलाम को 12 किलो की गोभी भेंट कर चुके हैं। जगदीश पारीक ने

अजीतगढ़ सीकर राजस्थान का वह गांव है, जहां पानी की कमी यहां के किसानों को बहादूर मायूस करती है। यहां के ज्यादातर बाजार सेवी पर ही अक्रित हैं। इन्होंने से एक है 70 वर्षीय जगदीश पारीक जो मूर्खियों का अभाव, मदद

की उमीद के साथ देश को पहले पायदान पर लाने की जिद को पूरा करने की काशिश में है। पूर्व राष्ट्रपति व वैज्ञानिक स्व. ए.पी.जे. अन्वल कलाम को 12 किलो की गोभी भेंट की थी। अभी राष्ट्र के गोभी पर्याप्तियों से मिल रुके और राष्ट्र के से लेकर किसान वैज्ञानिक तक का सम्मान प्राप्त कर रुके जगदीश पारीक 2001 में अपनी जैविक कृषि से उड़ाई 11 किलो की गोभी के लिए इस बोज को सो सकते हैं। गोभी की इस किसिन के लिए जिला सन 2001 में प्राप्त रूद्ध इसोबोजन अवार्ड से सम्मानित होने के बाद इनके बोज को आईपीआर (इंटलोकल प्रॉफेंटी राइट्स) का भी धरकत बना दिया है। जगदीश अब अपने बोज को पेटेंट करनाचाहते हैं।

सन 2001 में 11 किलो की गोभी

भी बताया है जिसे उड़ाने 'अजीतगढ़ सलेक्शन' नाम दिया। इसने नई किस्म की गोभी को डायाक जाता है। कोट प्रतिरोधक क्षमता रखने वाले बीज की खास बात यह है कि ग्रीष्म ऋतु (मुख्य माह जून से अन्दूचर तक) में भी आप इस बोज को नो सकते हैं। गोभी की इस किसिन के लिए जिला सन 2001 में प्राप्त रूद्ध इसोबोजन अवार्ड से सम्मानित होने के बाद इनके बोज को आईपीआर (इंटलोकल प्रॉफेंटी राइट्स) का भी धरकत बना दिया है। जगदीश अब अपने बोज को पेटेंट करनाचाहते हैं।

सन 2001 में 11 किलो की गोभी

पात्र किसानों को शीघ्र मिलेगा ऋण माफी का लाभ: सहकारिता मंत्री

जयपुर (कास)। सहकारिता मंत्री उदयलाल अंजना ने राज्य विधानसभा में बताया कि सरकार जनधोषण पत्र को लागू करने के लिए काढ़ दिया है। राज्य सरकार ने किसानों की ऋण माफी निर्णय का आदेश जारी कर दिया है।

उड़ाने वालों के लिए किसानों की प्राप्तता निधरण के लिए मंजूरी प्राप्त अधिकारियों की अन्तर विभागों समिति का गठन किया जा चुका है तथा समिति के दो दो बैंक अधिकारियों द्वारा बोर्ड अधिकारी चुनकर लाभान्वित किया गया है।

उड़ाने वालों के लिए किसानों की प्राप्तता निधरण होती ही प्राप्त किसानों को शोषण लाभान्वित किया जाएगा। सहकारिता मंत्री ने बताया कि केंद्रीय सहकारी बैंकों के स्तर पर उपलब्ध वित्तीय

संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए उक्त बैंकों द्वारा ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से कृषकों को स्वीकृत साथ की गयी अन्तर्गत कृषकों की मांग व अवैध यत्न से 1.12 अलपकालीन फसली ऋण

उपलब्ध करवाया जाता है। वर्ष 2018-19 खरीद में राज्य के 19 लाख एक हजार कृषक सदस्यों को 8304.23 करोड़ रुपये का फसली ऋण वितरण कर लाभान्वित किया गया था।

उड़ाने वालों के लिए किसानों की प्राप्तता निधरण होती ही प्राप्त किसानों को शोषण लाभान्वित किया जाएगा। सहकारिता मंत्री ने बताया कि केंद्रीय सहकारी बैंकों के स्तर पर उपलब्ध वित्तीय

सृष्टि एग्रो

विज्ञापन हेतु

सम्पर्क करें

मोबाइल : 7728897568

jaipur@srushtiagronews.com

विज्ञापन मात्र

एक

कॉल की दूरी पर

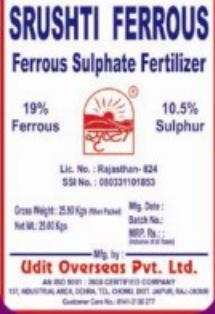
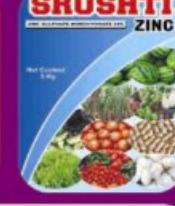
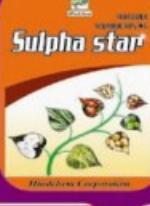
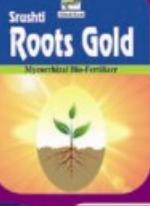
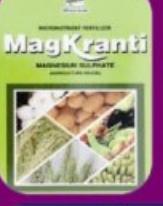
उद्दित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान
सरकार द्वारा
उर्वरक अब मान्यता
प्राप्त दरों व अनुदान
पर उपलब्ध
फर्टिलाइजर

- जिंक सल्फेट 21 प्रश.
- जिंक सल्फेट 33 प्रश.
- फेरस सल्फेट 19 प्रश.
- कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
- मैनीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर

- राइजोवियम पाउडर
- एजेटोबेक्टर पाउडर
- पी.एस.बी. पाउडर



WELCOME INQUIRY

Contact : 7975653498 (Rajesh Sharma)

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वास्थ्य : सूरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं पुस्तक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कोम न्यू लोहापाटी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विष्वकाशी पर्यावरण, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। स्पष्टाक : सूरेश जी. शर्मा सम्पादित शोधकार्यक्रम RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com

FERTILIZER

- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

BIO FERTILIZERS

- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)